ICRISAT International Crops Research Institute for the Semi-Arid Tropics
Science with a human face

ज्यादा जानकारी के लिए कृपया संपर्क करें :

शौकत राठेर +91 8978882187 **या** r.showkat@cgiar.org

राम धुलीपला +91 40 30713237 **या** R.Dhulipala@cgiar.org

जूही अहमद +91 9885212092 **या** juheea@microsoft.com

तत्काल जारी करने के लिए

अग्रणी डिज़िटल कृषि ऐप्लीकेशन जलवायु परिवर्तन से मुकाबला करने में किसानों की करेगी मदद

हैदराबाद, भारत, 09 जून, 2016 : भारतीय राज्य आंध्र प्रदेश के लिए एक वैयक्तिक ग्राम सलाहकार डैशबोर्ड के साथ ही किसानों के लिए नई बुआई ऐप्लीकेशन को राज्य के कृषि और छोटी जोत वाले किसानों से अच्छी प्रतिक्रिया मिलने और व्यापक सुधार देखे जाने की उम्मीद है।

बुआई ऐप से किसानों को अधिकतम फसल पैदावार हासिल करने में मदद मिलेगी, क्योंकि यह ऐप किसानों को मौसम की स्थिति, मिट्टी और अन्य मानदंडों के आधार पर फसलों की बुआई करने का सर्वश्रेष्ठ समय के बारे में सलाह देता है। यह इंटरनेशनल क्रॉप्स रिसर्च इंस्टीट्यूट फॉर सेमी–एरिड ट्रॉपिक्स (आईसीआरआईएसएटी), माइक्रोसॉफ्ट और आंध्र प्रदेश सरकार के बीच साझेदारी से संभव हो पाया है। इस अग्रणी डिज़िटल टूल्स को आईसीआरआईएसएटी द्वारा जारी किया गया, जिसे माइक्रोसॉफ्ट ने विकसित किया है। वैयक्तिक ग्राम सलाहकार डैशबोर्ड को विशेषतौर पर आंध्र प्रदेश प्राथमिक क्षेत्र मिशन (एपीपीएसएम)– रायथु कोसम (Rythu Kosam) के अधिकारियों को सक्षम बनाने के लिए विकसित किया गया है, ताकि कार्यक्रम का व्यापक स्तर पर बेहततर प्रबंधन किया जा सके।

आईसीआरआईएसएटी के महानिदेशक डॉ. डेविड बर्गविन्सन (Dr. David Bergvinson) ने कहा, *''काफी सारे बिखरे हुए आंकड़ों को एकसाथ करके एक विश्लेषणात्मक टूल विकसित किया गया है, जो किसानों को व्यापक एवं सटीक भविष्यवाणी देता है, जिसकी उन्हें सख्त जरूरत है। हम छोटे जोत वाले किसानों की आय बढ़ाने और जीवन में सुधार के लिए माइक्रोसॉफ्ट के साथ काम करने को लेकर उत्साहित हैं और इससे हमारे डिज़िटल कृषि पहल को बड़े स्तर पर बढ़ावा मिलने जा रहा है।''*

आईसीआरआईएसएटी ने माइक्रोसॉफ्ट कॉरटाना इंटैलिजेंस सुइट सहित मशीन लर्निंग (किसी विशेषीकृत प्रोग्राम के बगैर कंप्यूटर्स से सीखने की क्षमता) और पावर बीआई या बिज़नेस इंटैलिजेंस को अपनाया है, ताकि टैक्नोलॉजी के माध्यम से

किसानों और सरकारी अधिकारियों को सशक्त बनाया जा सके और राज्य में डिज़िटल फार्मिंग कार्यप्रणाली को प्रोत्साहित किया जा सके।

इस घटनाक्रम पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए **माइक्रोसॉफ्ट इंडिया (आरएंडडी) प्रा. लि. के प्रबंध निदेशक श्री अनिल भंसाली** ने कहा, *''हमें अपनी टैक्नोलॉजी के माध्यम से किसानों के जीवन को प्रभावित करने वाले अभियान में आईसीआरआईएसएटी का सहयोग कर प्रसन्नता हो रही है। भारत की अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्वपूर्ण योगदान है और कृषि क्षेत्र में उन्नत विश्लेषण को लागू करने से खेती–बाड़ी करने की विधि में समरूपता एवं सुदृढ़ता लाने में मदद मिलेगी। बुआई ऐप्लीकेशन और वैयक्तिक ग्राम सलाहकार डैशबोर्ड को शक्तिशाली क्लाउड–आधारित भविष्यवाणी विश्लेषण मुहैया कराने के लिए विकसित किया गया है, ताकि अहम सूचनाएं और दृष्टिकोण के लिहाज से किसानों को सशक्त बनाकर फसल के नुकसान को कम कर पैदावार बढ़ाई जा सके, जिससे किसानों का तनाव कम होगा और बेहतर आय प्राप्त होगी। हमें न केवल कृषि में दक्षता लाने, बल्कि स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और इससे अलग क्षेत्रों में भी दक्षता लाने के लिए माइक्रोसॉफ्ट एज्यूर मशीन लर्निंग और पावर बीआई पर पूरा भरोसा है। यह डिज़िटल कृषि की दिशा में अहम शुरूआत है और इससे सरकारों और इस टैक्नोलॉजी की क्षमता का पता लगाने में इसके हितधारकों का भी व्यापक फायदा होगा और किसानों को विविध समाधानों की पेशकश की जाएगी।''*

बुआई ऐप्लीकेशन अमेरिका की व्हेअर इंक (Where Inc) द्वारा मौसम की भविष्यवाणी के मॉडल्स और कुरनूल जिले में पिछले 45 वर्षों की बारिश के साथ ही साथ मूंगफली बुआई में प्रगति के 10 वर्षों के व्यापक आंकड़ों के साथ इंटरफेस के लिए शक्तिशाली कृत्रिम इंटैलिजेंस का इस्तेमाल करता है। इसके बाद इन आंकड़ों को भविष्यवाणी के लिए डाउनस्केल किया जाता है और किसानों को बुआई के लिए उपयुक्त हफ्ता चुनने की सलाह देता है। रायथु कोसम परियोजना द्वारा संग्रहीत अन्य आंकड़ों के साथ जब इसे मिलाया जाए, तो इससे एक समृद्धि डेटा सेट्स तैयार हो सकता है, जिसका भविष्यवाणी मॉल्डस तैयार करने के लिए प्रोसेस किया जा सकता है।

इसी तरह, माइक्रोसॉफ्ट द्वारा विकसित वैयक्तिक ग्रामम सलाहकार डैशबोर्ड (Personalized Village Advisory Dashboard) विभिन्न पर्यावरणीय कारकों पर त्वरित नजरिया पेश करता है, जो स्वस्थ्य फसल पैदावार तय करती है। प्रायोगिक तौर पर इसे हाल ही में लॉन्च किया गया है और इसके तहत् किसानों को बुआई के आंकड़े को तेलुगू भाषा में एसएमएस संदेश के जरिये सूचनाएं प्रेषित की जाएंगी। राज्य के 13 जिलों में आईसीआरआईएसएटी के फील्ड अधिकारियों द्वारा रायथु कोसम के लिए मैनुअल तरीके से संग्रह किए गए आंकड़ों को माइक्रोसॉफ्ट के एज्यूर क्लाड पर अपलोड किया गया है। शक्तिशाली बिज़नेस इटैलिजेंस (बीआई) टूल्स का इस्तेमाल कर यह डैशबोर्ड मिट्टी के स्वास्थ्य, उर्वरकों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी मुहैया कराता है और दुनिया के श्रेष्ठ उपलब्ध मौसम भविष्यवाणी करने वाली प्रणालियों और वैश्विक भविष्यवाणी मॉडल्स से प्राप्त

आंकड़ों के आधार सातत दिनों की मौसम की भविष्यवाणी भी करता है। इसके बाद इन आंकड़ों के आकार को छोटा कर ग्राम स्तर पर यथासंभव सटीक भविष्यवाणी करता है, ताकि छोटे जोत वाले किसान प्रभावी तरीके से निर्णय लेकर जलवायु परिवर्तन की चुनौती से निपट सकते हैं।

आईसीआरआईएसएटी रायथु कोसम को तकनीकी सपोर्ट करता है, जिसका लक्ष्य 2022 तक आंध्र प्रदेश को तीन श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले राज्यों में शुमार करना है। इस तकनीकी इनपुट में 13 जिलों में प्रत्येक में 10,000 हेक्टेयर का पायलट साइट की स्थापना करना, मृदा विश्लेषण प्रयोगशालाओं को अद्यतन करना, योजना में तकनीकी मदद करना और इसके साथ ही साथ छोटे जोत वाले किसानों की सार्वजनिक–निजी साझेदारी के समावेशी माध्यम से बाजार उन्मुख विकास (आईएमओडी) और राज्य में निजी निवेश को प्रोत्साहित करना शामिल है।

###

संपादक के लिए नोट

'भारत का चावल का कटोरा' के नाम से चर्चित आंध्र प्रदेश वर्तमान में कम बारिश और जजलवायु परिवर्तन के प्रभावों की चुनौती का सामना कर रहा है। इन चुनौतियों से निपटने के लिए राज्य के प्राथमिक क्षेत्र मिशन का मकसद है : (क) उत्पादकता बढ़ाना, (ख) जल संरक्षण और सूक्ष्म सिंचाई के माध्यम से सूखे के प्रभाव को कम करना, (ग) फसल कटाई के बाद प्रबंधन में सुधार और (घ) चिह्नित फसलों के लिए प्रोसेसिंग, मूल्यवर्धन क्षमता और आपूर्ति श्रृंखला में सुधार लाना।

आंध प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री एन. चंद्रबाबू नायडु ने आईसीआरआईएसएटी के महानिदेशक डॉ. डेविड बर्गविन्सन (**Dr. David Bergvinson**) के साथ 17 जनवरी, 2015 को हुई बैठक में नई टैक्नोलॉजी द्वारा पेश किए जा रहे अवसरों का लाभ उठाते हुए छोटे और सीमांत किसानों के लाभ की खातिर नए चरण के विकास के लिए छलांग लगाने पर जोर दिया था। उन्होंने स्मार्ट विलेज़ अभियान शुरू करने के बारे में भी बात की,, जिसके तहत् राज्य के किसानों को वायरलेस कनेक्टिविटी मुहैया कराई जाएगी।

डॉ. बर्गविन्सन ने नई आईसीटी–आधारित इनोवेशंस कृषि इनोवेशंस को हितधारकों तक आपूर्ति करने का उल्लेख किया और प्राथमिक क्षेत्र मिशन की सफलता में आईसीआरआईएसएटी की ओर से पूरा सहयोग करने की बात कही।

रायथु कोसम की रणनीति 2014 में आईसीआरआईएसएटी द्वारा तैयार की गई थी।

http://www.aponline.gov.in/apportal/Strategy%20Paper.html

http://www.icrisat.org/newsroom/latest-news/happenings/happenings1644.htm#1

प्रत्येक 13 जिलों के लिए तुलनात्मक लाभ तैयार किए गए। इसके आधार पर जिला स्तर पर रणनीति तैयार की गई, ताकि अगले 5 वर्षों में आंध्र प्रदेश की विकास दर दहाई अंक में हो सके। प्रत्येक जिले में विभिन्न मंडलों या प्रशासनिक संभागों में 10,000 हेक्टेयर और 4–5 गांवों (करीब 2,000 हेक्टयर प्रति गांव) और 100 से 200 किसानों की पहचान की गई है। जिला रणनीति के आधार पर आईसीआरआईएसएटी इन किसानों के साथ काम कर रही है और अपनी वैज्ञानिक ज्ञान को साझा कर रही है। इसका मकसद एक कार्य मॉडल को प्रदर्शित करना है, ताकि अन्य भी इसके सकारात्मक नतीजों को देखकर इसे अपनाने को प्रेरित हों। इस तरह से रणनीति का प्रसार होगा। परियोजना क्षेत्र से जुड़े फील्ड अधिकारी एंट्री प्वांइट गतिविधि, मृदा परीक्षण/विश्लेषण और मृदा स्वास्थ्य कार्ड और उर्वरकों के इस्तेमाल के बारे में सूचना मुहैया कराएंगे। इन गांवों में आधारभूत सर्वेक्षण किया गया और जमीन, समाज, फसल आदि के बारे में उनकी सभी सूचनाओं को संग्रह किया गया। अब फसल और पैदावार से संबंधित आंकड़े मासिक आधार पर फील्ड अधिकारों द्वारा जुटाए जा रहे हैं और उसे आईसीआरआईएसएटी को भेजा जा रहा है। इन आंकड़ों को इंटर किया गया है और मासिक प्रगति प्राप्त कर उसे मुख्यमंत्री के साथ साझा किया गया और साथ ही यह बताया गया कि आईसीआरआईएसएटी की अगुआई में रायथु कोसम परियोजना किस तरह से प्रगति करर रही है।

आईसीआरआईएसएटी के बारे में

इंटरनेशनल क्रॉप्स रिरसर्च इंस्टीट्यूट फॉर सेमी–एरिड ट्रॉपिक्स (आईसीआरआईएसएटी) एक गैर–लाभकारी, गैर–राजनीतिक संगठन है, जो एशिया और उप–सहारा अफ्रीका में दुनिया भर के विभिन्न साझेदारों के साथ विकास के लिए शोध करता है। इसका दायरा 55 देशों में 6.5 मिलियन वर्ग किलोमीटर, अर्ध–शुष्क उष्णकटिबंध के 2 अरब से ज्यादा लोगों, जिनमें से 644 मिलियन लोग सबसे गरीब हैं, तक तक फैला है।

आईसीआरआईएसएटी के इनोवेशंस शुष्क क्षेत्र में बाजार का दोहन करने, वहीं जोखिम का प्रबंधन–समावेशी बाजार–उन्मुख विकास (आईएमओडी) रणनीति के माध्यम से के गरीबों को गरीबी से निकालकर समृद्धि की ओर जाने में मदद करते हैं। आइसीआरआईएसएटी का मुख्यालय पतानचेरू, हैदराबाद, तेलंगाना, भारत में हैं, वहीं उप–सहारा इलाके में दो क्षेत्रीय हब और 6 कंट्री कार्यालय हैं। यह सीजीआईएआर कंसोर्टियम का भी सदस्य है।

आईसीआरआईएसएटी के बारे : www.icrisat.org , आईसीआरआईएसएटी की वैज्ञानिक सूचनाओं के लिए देखें : http://EXPLOREit.icrisat.org

सीजीआईएआर भविष्य की खाद्य सुरक्षा के लिए वैश्विक कृषि अनुसंधान साझेदार है। इसके विज्ञान को 15 शोध केंद्रों, जो सीजजीआईएआर कंसोर्टियम के सदस्य हैं, के साथ हही सैंकड़ों साझेदार संगठनों द्वारा अपनाया गया है। www.cgiar.org